

१६४

कलशाचल
विधि

१६४

कलशाचल
विधि

२ सम्मन् ८३७ सादुपदवष्टि १७२३ ॥ साः दत्तवै १३ ॥ अशीत ३३ ॥
गामनै १३ ॥

ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ कलम
 चन विधि विस्तर ॥ ॐ उमाननादि
 चक्रचमनगव क. खाननचु क
 ॐ शुभादि ॥ य उमानस्य अम
 ककार्यकलम ॥ चननिमित्तयथ
 क ईसुया या धनम ॥ क ग न
 क ॥ माहाध्वकात्रमगनानां उता
 नां ज्ञाननमिरे ॥ क ॥ मरुद्वर्ग
 यनमनीमिनिवरास्करा ॥ ए
 स्करयपूर्वो ॥ पूष्यराउते
 ॐ सिद्धि वरु ॥ उथावात ॥ य उम
 ह्यमि पूष्यराउते समर्थयामि
 पूजारुडिजाय ॥ वाक्कल्वपूजा
 रुडिद्राया ॥ वाक्कल्वना ॥ ॐ शुभ
 धि ॥ उन्नतमस्करा ॥ न्यासाध्या
 यपूजा ॥ आत्मपूजा ॥ नमो द्वात्रा
 र्जुनी ॥ ॐ गत्वाजामि ॥ ॐ दवस्य
 त्वा ॥ ॐ मप्रयुरि ॥ ॐ शुभाशु

मा ॥ ॐ यस्य कृष्ण ॥ ॐ यदक
 द ॥ ॐ यद्वानन ॥ ॐ याना
 मि ॥ ॐ यमपन ॥ ॐ आसि
 ॐ द्वात्रादती ॥ ॐ त्रत्वा निगृह्ण
 ॐ य उम ॥ ॐ व देवि ॥ अमि
 मी ॥ ॐ व वत्वार्य ॥ ॐ शुभ
 या ॥ ॐ गनादती ॥ ॐ उप्रकन
 ॐ तदीत्य ॥ ॐ गलतीत्वा ॥ ॐ
 वरुह्यग ॥ ॐ पाव कान ॥ ॐ यी
 म्रग ॥ ॐ शुभाक सिद्ध ॥ ॐ नमो
 वरुणाय ॥ ॐ सफ य उरति ॥
 ॐ शुभोयहा ॥ ॐ ति द्वात्रा
 र्जुनी ॥ आध्यायनाय नमो ॥ ॐ शु
 नकाहाय ॥ ॐ स्कन्दाय ॥
 ॐ नारायणाय ॥ ॐ यदाय ॥
 ॐ यगाय ॥ ॐ कनराय ॥
 ॐ कर्णिकाय ॥ ॐ धर्मा ॥
 ॐ वृषाहाय ॥ ॐ सिंहाहा

यशः॥ अना॥ हुं त्रयसिंहादि
नीलवं, अत्रकं च च सति
वक्रवक्रु विनयं च च उ उ उ
मरुत नै॥ प्रिगुता कध प्रेय
वंदया कत्र गध प्रली। वासा
नक्त गमाय वी हि उ उ कत
गम वरा॥ रुमा रुत्र गह र्षा गी
हमाचत्र विह वल। वरा मृ
ती मृत्रं ध्यात्वा सर्वया पपुला
सनी॥ हुं से पु र्क न माय
मृयू र्वाय ध्यान पूषीन
मशा हुं र्द ९॥ ०० मे मे नी
गम हुं सि गा सि ग॥ हुं द वी
वाप ४॥ हुं ग्रायाय वी॥ हुं स नी
र्या॥ हुं ग्राय न व मृता॥ हुं
पञ्चनय ४॥ हुं हुं द माप ॥
हुं त्व ९ सा मयु वि कि ता॥ हुं
या डा मधी॥ हुं वृह स्प गनु
दि॥ हुं गृह ते वा॥ हुं य य ३

पुथिग्रा॥ हुं या ४६ लिती॥ हुं न
का रु ली॥ हुं वी रु य प्र मा॥ हुं स
त्रा हि भू वा वि वि द वा॥ हुं ०० रु
या हि॥ हुं वृ ली स वि वा॥ हुं समू
द वा नृ म॥ हुं समू द डा षा॥ हुं
समू द्रा र्म मी॥ हुं समू य द वा
हुं उ र्म मी॥ हुं ग्रा डि घु क न गी
॥ हुं उ प ह मा॥ हुं स फ वि ष या॥
हुं व नृ र्वा र्म॥ हुं वृ न य र्वा नी॥
हुं ०० द वि ष॥ हुं न म र्म मृ वा
या॥ हुं नि वा रे वा॥ हुं गृ म्वा नि क
॥ हुं ग्रा म्वा र्म॥ हुं ग्रा म्वा र्म॥ हुं डि
न य व र्म॥ हुं ग्रा नो र्वा॥ ॥
हुं र्म र्म व र्वा॥ हुं स य र्म मृ डि
०० म्वा र्म म्वा र्नी॥ पृ र्म र्म र्नी
ऊ न य र्म र्म म्वा र्नी॥ स र्म र्म र्म र्नी
सा॥ हुं ग्रा र्म र्म॥ हुं ०० मे र्म र्म र्नी
हुं ग्रा म्वा र्म॥ हुं उ र्म र्म॥ हुं उ
रु र्म र्म॥ हुं ग्रा नी र्म र्म र्नी॥

अथेमानये॥ इति विष्णु
उमाधामबलितलाननना॥

गनयानपुडनी॥ उगलाना
ला॥ उगलया॥ उतमसरा
या॥ उतनामराययन॥ उय
पुषता॥ इति यंसलाननना॥

गमयामपुडनी॥ उताहिमसि
र्या॥ उरदाताअग्नि॥ उतमवा
यवा॥ उडयदूता॥ उअयने
इति गमयामपुडनी॥

कीमारीपुडनी॥ उवकालिम
उतमसराकवायच॥ उयय
वागमा॥ उद्विषु॥ उयस्य
दूमा॥ उतु॥ उता
वयसा॥ उकिर॥ उवपुमा॥ उति
कीमारीपुडनी॥ धनलाननना॥
इति विष्णु

उयवदिहा॥ उमंरुता॥ उ
विष्णुचक्र॥ उअकृष्ण॥ उमि
वानामासि॥ उद्विषु॥ उव
कस्यरा॥ उविष्णुकर्मा॥ उय
पुता॥ उतमाहस्यो॥ उमरु
गर्भ॥ उतीवात॥ उकिर॥ उयव
पुमा॥ उममिरा॥ उतिरुवा
पिस्वापुडनी॥ धनलाननना॥

मासादिपकथिपुडनी॥ उ
अर्धमासा॥ उअयपकथि॥
उ॥ उदा॥ उमापकथि॥ उतक
पय॥ उसाहा॥ उयानया॥
उवागमिपु॥ उययलुपाक
उअवायवा॥ उअकृष्ण॥ उ
अयम॥ उमवक॥ उतास
विष्णु॥ उममरुता॥ उअयप
मा॥ उअमिरा॥ उवापक
उ॥ उदीर्याता॥ उअमिनागडा

सा॥ॐ नमो विष्णवे॥ देवा
वध्या॥ॐ श्रुतवाजा॥ॐ श्रुति
मी॥ॐ सदा जायते॥ॐ वाम
मया॥ॐ डागनू॥ॐ यत्न
या॥ॐ तामीगनी॥ॐ सुपयु
लि॥ॐ शोभनानि॥ॐ योवक
ॐ सुप्रसि॥ॐ गडासि॥ॐ या
रुलिनी॥ॐ श्रुतपदा॥ॐ नम
यत्न॥ॐ मनाहूति॥ॐ यत्न
धर्मकलमधि सर्व॥
जायते॥ॐ सुप्रसिद्धवत
नामकलमूननदीतीर्थगंग
दिताये॥ॐ पूज्यवनामधारी॥
रुलकूलकूममयुग॥ॐ
सत्यज्ञवत॥ विघ्नानधिपद॥ॐ
॥कलमूननदीतीर्थगंग
नंदवकूमसुप्रसिद्धवतकलम
यमंगलमंगलाना॥ॐ श्रुतग
॥ॐ वाक्यपुत्र
ॐ नमो देवा राजा ॥ॐ नमो

श्रुतवाजा॥ॐ श्रुति
मी॥ॐ सदा जायते॥ॐ वाम
मया॥ॐ डागनू॥ॐ यत्न
या॥ॐ तामीगनी॥ॐ सुपयु
लि॥ॐ शोभनानि॥ॐ योवक
ॐ सुप्रसि॥ॐ गडासि॥ॐ या
रुलिनी॥ॐ श्रुतपदा॥ॐ नम
यत्न॥ॐ मनाहूति॥ॐ यत्न
धर्मकलमधि सर्व॥
जायते॥ॐ सुप्रसिद्धवत
नामकलमूननदीतीर्थगंग
दिताये॥ॐ पूज्यवनामधारी॥
रुलकूलकूममयुग॥ॐ
सत्यज्ञवत॥ विघ्नानधिपद॥ॐ
॥कलमूननदीतीर्थगंग
नंदवकूमसुप्रसिद्धवतकलम
यमंगलमंगलाना॥ॐ श्रुतग
॥ॐ वाक्यपुत्र
ॐ नमो देवा राजा ॥ॐ नमो
॥ॐ सुप्रसिद्धवत॥ॐ नमो

अत्र सप्तमं यक ॥ पुं वं के ॥
कमस्यो कन्याया गक ॥ ॥
॥ थं का धि न कि ती
ह्यं ला मा ला रु ॥ ता का ह्यं ले
व धा व थ या व रु ॥ क ल ग य
ह व न ह्य लि क स र्च न ॥ ति र्म
कृ ता ॥ उं न थो रु ली ॥ उं श्रु धु
वा च त ॥ च व व ति ॥ स ले ख
वा क वा ता ॥ अ र्च वा ण ल र व न
ला य ॥ च त न त च के ह्य न न
वृ च क ॥ द द ड व स त पू वृ ष
व नो पं चाना ॥ ॥ थं क
धि क्रि या य र्क क ल सा दि ल
त त न के ॥ ॥ उं सै पू
र्ण क ल ग य मृ त्यु उ र या य
श्रु मृ ती षु वी ग कि स रि ता य
ॐ द मा स न त म शा पू र्ण ॥ उं
श्रु मृ ता मा य ॐ द मा स नै ॥
उं स ल ह न क प पा ला य ॐ द म
स नै ॥ उं ग द प यो पि मृ क र्ण

ॐ द मा स नै ॥ ॥ उं पं क
मा पृ क लो ॐ द मा स नै ॥
उं व रि द्वा रं ग म दि ॐ द मा स
नै ॥ उं को ला वी म य म स ता
य ॐ द मा स नै ॥ उं सै पू र्ण क
ल ग य मृ त्यु क या य मृ र्ण ॥
व द नै ॥ ति र्म व थ क्वा य वी ग प
थी ॥ उं ॐ द रु ल पू र्ण त मृ न
धू प दी प ह ल तै व या धि स क
ल्य सि धि व रु ॥ ॥ म लु ल
या च के ह्य न ता वा वा या ॥ रु
ण ॥ उं सै पू र्ण क ल ग य ॥ उं
द वा म ग मृ षी ना ॥ उं श्रु मृ
ह्य मा व लि ॥ उं वि षु मृ वा य
उं स र्व मं ग ल ॥ उं रु सि पू र्ण
धि क ॥ उं व दि ता सि ॥ उं नि र्म
नै नि र्मि क र्ण ॥ उं य प र्ण ॥
श्रु ग म्भ दि ॥ म लु ल म वा द
ल्य र्ण क या ॥ ॥ क्रि या यो

लोकावश्यात्सुसकायथकोपि
 युहतिरिवा॥विमिवादेकाया
 विवि॥ ॥अथना
 दकनप्रविमिवाथयाया॥विमि
 थिकलनप्रवृत्तयाया॥कलनया
 अउषुनिसुवर्गगतदसहवात
 मद्यनगयावग्नवाचनन॥धम
 सवायनामधमतामयावेद
 उ०००दविष्णु॥धनम॥उ०००
 ॥मयुलमदुथिदेवतलु
 यापलिलेदेकीमोवाकुडांसम
 लसुचननखाया॥वलिगुडका
 यासुदेवार्पिगडकस॥उ०दीर्घा
 युत्वा॥मालदेदेववर्गगताया॥उ०
 मगुदेवतानिषदमे॥ददवलिगुड
 कतम॥उ०ह्यातापुथिवा॥धुय
 दीयसुगुलधुनकेवाकसपूजा
 नानिकप०००॥ ॥यथ
 कर्मसवात्रकमावामामनवृयक
 वलंस्वधैलथसलोसालेद॥
 सुलिकसुसुता॥निर्मनुनवलि
 रोगसुसुता॥न०००॥

वैष्णव १२॥८

मंगरुंगा उवात उवात देव्याय
 एतद्वा य॥ एतद्वा लदे विद्या॥
 आगमो मातृकाया वा॥ यनेसय
 के प्रकृतिमा॥ उवा॥ यत्ना को॥
 ५॥ मिश्रवसा उवात सस के मिश्रा
 इवसा खवसेताम कनधवसे इ
 था॥ **वाक्यमादि दक्षिणा**
 विद्या॥ अरिषक च नृनादि॥ वालि
 (मवाचन वगत रवक॥ आनि
 र्वाद्य॥ वालिपाती॥ उवा॥ यग्याम
 ॥ प्ररुं आत्रयिपुति द्वा॥ ईस्वार्थि व
 (मवाचन को मा गीया॥ ददत इ कडा
 दाडा वालिका र्गयने॥ कायेरु न
 साहालया डावलक मय अरुच
 इवसाहालया खवलका सवनेन
 गरु वदो मवाचन वाक विद्या॥ हेरु
 कल्यानेन नी कलिवा वया वकन
 मसगु नाम गडि ययके ददवलि
 वलेन द्वाया॥ मामनमा वा जाल
 वे नि॥ **कृतिनामा चानन विद्या॥**
॥ श्रीधर नानयान वि
 धिमलजाताथ कलम मवाचन
 या॥ हेरुनात विविधय उवा विजा

ममकयप्रपुसतक॥यादाय
विदा॥५॥~~ममकयप्रपुसतक॥~~
नामिमिमा॥कयाकानकेलोवा
जावावीसनकसदातउधमित
वननासितकादेअममसयाव
कनेककाया॥पूवयदनकायि
वे॥पूवाककापुधायागैमटका
यम॥~~कलगाधिवाम~~
विप्रियदद्वि॥॥वावनकाया
देकलगासम॥इनलाखकाच
लेउतिउवसलाचकेकाया
यके॥~~कनेगलखनअ~~
किषक॥चन्यनसिंअसगुल
गीवाय॥सरेमनेधिपुतिहू॥
वलिथसावगतगचक॥ईवपि
रगा॥मपसकासारीपूजाधुय
वलिपितयनीसालपूजाएदि
निगुभव॥सप्रतिनीमालेगात
यके॥~~सिदाठयदेकल~~
मग्रादिजाययके॥पूजावा
सिमपदिनीवियक॥मेवयास
गुलगायके॥कामागोअरे
हकाया॥मासननवा

५॥१॥
निआनेपडातगुदुवायमाव
लियातकरककाया॥यदवलिन
हुयाप्रलिलंदतयावयदनवा
वकेरकाया॥~~ममकयप्रपुसतक॥~~
वि॥~~ममकयप्रपुसतक॥~~
॥यउमानहममकसंगनाग
रुतपुकात्रककलगावनेवाक
॥थवउत्रेउधायसहिहायय
केपूजाकाया॥विधिथेकलगा
वनयाया॥अथकर्मसविधि
यादावजागतपुनसमटका
पूजाकायायालावातयावमट
जातयमत्रयासतथयावकेह
धकायकाकालसियातलीदया
दवियमकलगाउधेरगा॥०॥
~~ममकयप्रपुसतक॥~~
~~ममकयप्रपुसतक॥~~
ममकयप्रपुसतक॥यउमान
हममकसंगनाग
दकलगावनवाक॥विधिथेकल
लगावनयाया॥सगुलसविम
वा॥~~ममकयप्रपुसतक॥~~
ममकयप्रपुसतक॥ममकयप्रपुसतक॥
ममकयप्रपुसतक॥ममकयप्रपुसतक॥
ममकयप्रपुसतक॥ममकयप्रपुसतक॥

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

म. न. म. म. म.
वि. वि. वि. वि.
म. म. म. म.

ASHA ARCHIVES

3074

यावद्विधिः कलम्बुतय
य॥ कलम्बुतय॥ यउ सान्तय
लिङ्गशास्त्रकासात्री॥ यमपु
जा मायधृतकादा॥ यम
कर्मविलसा॥ लाहा लहयका
वतिर्मन्त्र॥ कलम्बुतय
नका॥ लुप॥ यमपु
गुणसद्विधा मायशान्तदाय॥
कल्यायाया लाहा सचततव
लिकचायावलीमिनदास सीया
वोद्विष्टादिदक्षिणकलम्बुलिष्ट
कचवृत्तसिद्धनसगुणजीवा
दा॥ सदेव्यायिपुतिरुका॥
ईवायिखादिष्टाय॥ कामात्री
पूजेतयवाय॥ ह्ययिक्लिवातन
नका॥ सगुणधर्मितदयपतधि
यका॥ लुविष्टादिदक्षिणकलम्बु
वगडिशाहा विद्यालाघवसा
म॥ सगुणधर्मिप्रातर्वावगडि
दासधधृतकादाकादास
नयावधर्मिप्रातर्वा॥ चेमसिद्ध
सगुणसिक्लिवातविष्टात॥ ईति

वगडिविद्ययाविधिः
कुययाविधि॥ यउ सान्तय
नका॥ लुविष्टादिदक्षिणकलम्बु
(थं) कलम्बुतय॥ कलम्बु
सगुणधर्मिप्रातर्वा॥ यमपु
रोधमपुडनी॥ यमकर्म
लाहा प्रहवसिक्तसस्तीतिर्म
हनवलिवातवलि॥ जात॥ श्री
पण्णलीखनकाया॥ कलम्बुतय
तान्नका॥ लुप॥ सगुणधर्मिप्रातर्वा
सगुणसद्विधा मायशान्तदाय॥
नदाय॥ यमपुतनसचकर्मदक्षि
णस्यावककलम्बुलिष्टातर्वा
तसिद्धनसगुणजीवा॥ सदेव्यायि
पुतिरुका॥ ईवायिखादिष्टाय
युजाहायायिप्रातर्वातन
का॥ ईति सगुणधर्मिप्रातर्वा
नायकलुयया॥ यउ सान्तय
प्रातर्वाकादा कलम्बुतय॥
विधिः कलम्बुतय॥ स
गुणसविगाय॥ पुंयवाहसुवा
सा॥ विलासिगाय॥ यमपुतन
दक्षिण॥ पुंयवदक्षिण॥ विलासिगाय॥
ह्ययिक्लिवातविष्टात॥ ईति

ॐ वसाय विष्णु ॥ वलु ध सु गु ॥
 ॥ य म ह म स स सा ल ह
 य क ॥ नि मा च न ॥ अ र्घ पा ॥
 ख त ला य ॥ क ल म स स त न
 न क ॥ ल ण ॥ म त ह ग ॥ उ वा स
 गु ल दं दू वं ना वि व ल त दू दू ॥
 त लु वि यो लू दू स वा स ॥ वं स
 लि त च ट क ॥ सिं धु स गु म म
 द ॥ द ॥ वि य क ॥ स ह
 म्ना त्र यि पु नि ल ॥ इ र्वा पि र्वा
 र्वा म स ॥ का म त्री दू य ॥ ह य
 दि स त न त क ॥ क ल म म दि र्
 प य क ॥ का म त्री दू य ॥ ह य
 वं लि त य क लू र य वि धि ॥
 अ थ ल म त्र धा व द्रा क्त न वि धि ॥ वि
 धि र्ध क त्र स दू दू यो य ॥ स गु
 दू दू दू य ॥ उ द धि क्ता य ॥
 उ दू दू म स ॥ ॥ उ व य धा ॥
 उ व सा य वि णु ॥ क स स ॥ उ द
 य य क ॥ उ लू वं ॥ उ द ह
 लि त ॥ रू रू य ॥ ह य वि नू

[illegible]

तम ॥ वंमि नल यमि रत्न ॥ ॥ गगन अरु विनीति विरुक्त नी ॥ ॐ आ नमः ॥
ॐ सदि यो ॥ ॐ यद्यत्तु मर्म ॥ ॐ निवा न्धा यान् ॥ नरु मी रा वासि ॥ ॐ अय
० स रुम ॥ युजा दन न ॥ ॐ सफ र य ॥ ॐ मि अरु विनीति विरुक्त ॥ ॥ गवर्ध
व कु ॥ स य जा गो एादि ॥ ॥ अरु वृत्ता मदि ॥ ॥ गगन अरु ॥ सफ र य ॥ ॐ नत्वा ॥
यो क्रि ना स ॥ व य ० सो मा ॥ व सा व विरु मसि ॥ ॥ हि न वधे न रु ॥ ॥ श्री रु य वृ म ॥ यो व
का त ॥ आ ० रु ले नी ॥ ॥ द धि का यो ॥ ॥ की द्य प्लि ॥ ॥ न को रु र्ने ॥ ॥ त्वि ज विरु का ॥ ॥
वलि पूक न ॥ ॐ न मा व नू म य ॥ ॥ अरु र व्वा ना ॥ ॥ वं मा न्द्रा य ॥ ॥ अरु व्वा य द
धि ॥ ॥ वृ र्वा दि ॥ ॥ गगन ग ल य ति मूक न ॥ ॐ न र म्प ॥ ॥ गल न मी र्वा ॥ ॥

ॐ मना भिगव्य यग ॥ ॐ र्वा दि ॥ ॥ रग य स पूजा ॥ ॐ वृत्ता य क्तान ॥ ॐ न म ० म
एवा य च ॥ ॐ य ग या ना ॥ ॐ वं द न्वि र्वा ॥ ॐ य स य कू म ॥ ॐ वं नु न्द वी ॥ ॐ जा
ग व द स ॥ ॐ यी शु ग ॥ ॐ र्वा दि ॥ ॥ वरि द्वा ना म्पे म्पे दि यू क न ॥ ॐ आ वृ र्वा ॥ ॐ
दं वि र्वा ॥ ॐ न म र्ग र वा य ॥ ॐ ग ल न र्वा ॥ ॐ म स र्वा ना ॥ ॐ मी वा र्वा ना ॥
ॐ न मा र्क स यो ॥ ॐ वृ र्वा य ग अ गि ॥ ॐ न म ० ग ग व व ॥ ॐ का ग व द स ॥ ॐ यी
शु ग ॥ ॐ वि ग य नू ॥ ॐ र्वा दि ॥ ॥ द द व लि यू क ॥ ॐ का ना वि र्वा य न म ० ॥

ॐ जगत्कर्मकर्म॥ ॐ व्यादि॥ ॥ अथमासादि॥ ॐ जगद्मासा॥ ॐ जगद्मासा
 ति॥ ॐ ष्वन्द्या॥ ॐ नक्रगयष्टवाह॥ ॐ थालाया॥ ॐ कालासिमेना॥
 मयल्लुपार्कत्या॥ ॐ जगद्वासा॥ ॐ जगद्कर्म॥ ॐ जगद्कर्म॥ ॐ जगद्कर्म॥
 वस्त्रगुणवृद्ध॥ ॐ सर्वतन्नासि॥ ॐ जगद्वासा॥ ॐ जगद्वासा॥ ॐ जगद्वासा॥
 इत्येका॥ ॐ जगद्वासा॥ ॐ तन्निविष्ट॥ ॐ देव्यावस्थ॥ ॐ जगद्वासा॥
 जायो॥ ॐ जगद्वासा॥ ॐ सप्तमिग॥ ॐ सप्तमिग॥ ॐ सप्तमिग॥

[illegible]

ॐ स्वस्ति नो मिमीता ॥ ॥ नमोऽथ कर्मकात्रये ॥ यद्वा मनसैः कथा
यमयाग ॥ कृतेऽष्टीकृतं त्रयं त्रयं त्रयं त्रयं त्रयं त्रयं ॥
निर्मलं न ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥
दुःखं न ॥ अथ पाण्डुपुत्रं न ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥
कर्मन कलगासखानननक ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥
द्वितीयं किं सकिं न ॥ यथैव मासं न न न ॥ दुःखं न ॥ दुःखं न ॥
दमासनं न ॥ पूर्णं न ॥ नृपं न ॥ नृपं न ॥ नृपं न ॥ नृपं न ॥

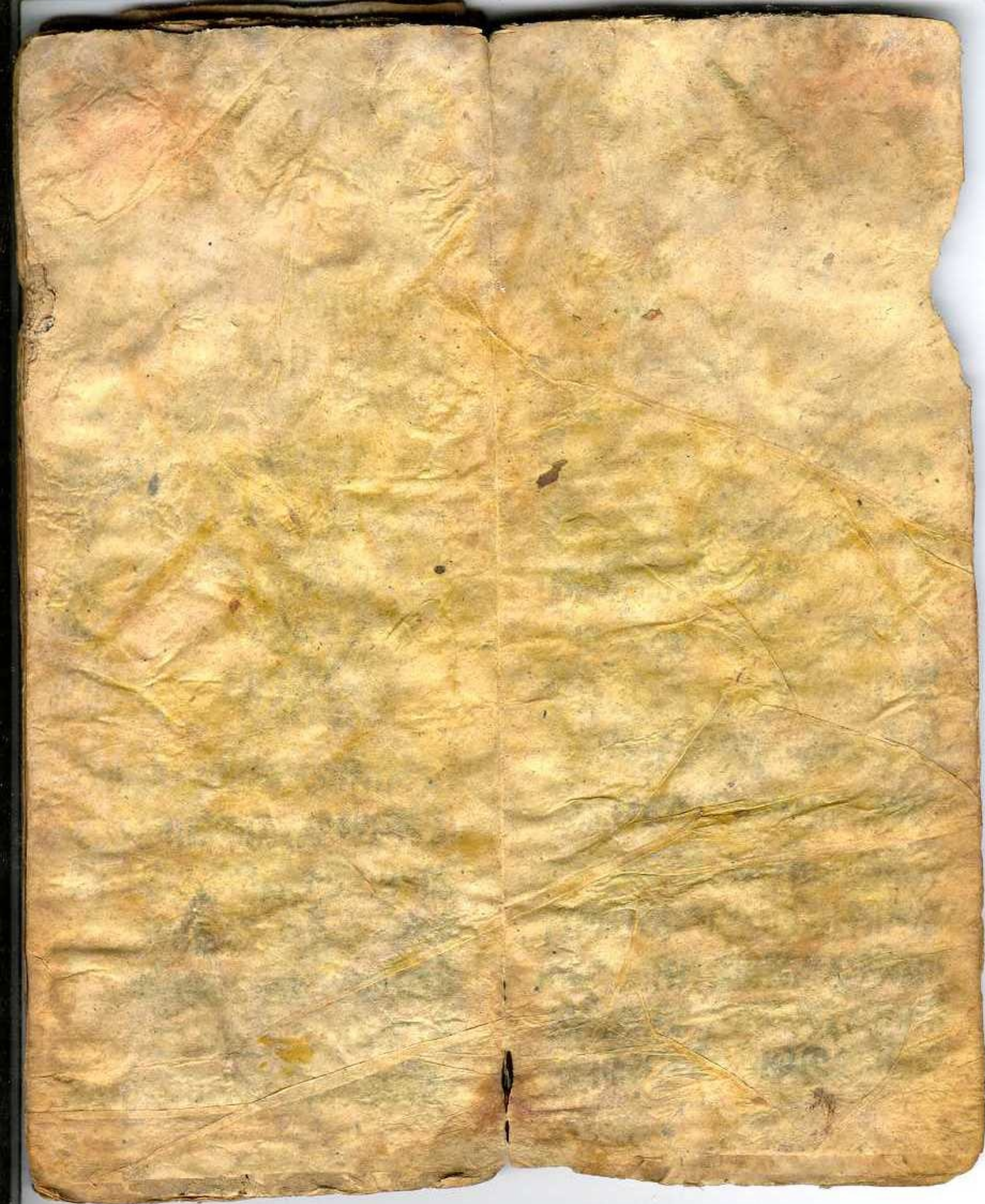
ॐ दं हं लं पूषणं वृलभूषदीप हं लेने वं च्यादि सी क त्यसि हि न म् ॥ ॥ म
 तु चो य के का दा वा य स्त्रा न म ॥ सो ए ॥ तु न म स र्सी यू लं क ल न गाय ॥ तुं य न्नो
 स धी ॥ ॥ स्व ग न ॥ तुं ज स्व स्त्रा मा व ल्ति या स रु न मां नो वि सी य ल बो क य शु
 व र्णु ना म शु मा र्के तु या य भ न म ॥ ॥ ग ल य मि ॥ तुं वि धृ म् न य वी ना य
 वि णु वृ या य ग न मा स र्वे वि ब्र ह्म न द र्द स र्वे ग्ग न र्कि न मा क्तु ग ॥ ॥ व ल्ति ॥
 तुं ति र्या न न्द प री ग्ग न र्के नि छ व र्क नि य म य ॥ व्या मा नी ग य र्द ग्ग न र्के य व र्क न म मा
 म् य ॥ ॥ ए गाय स ॥ तुं न म र्के क पि ले द वा न म र्के स न यू कि न ॥ य वि पु र्ण स र्वे दा ॥ ॥

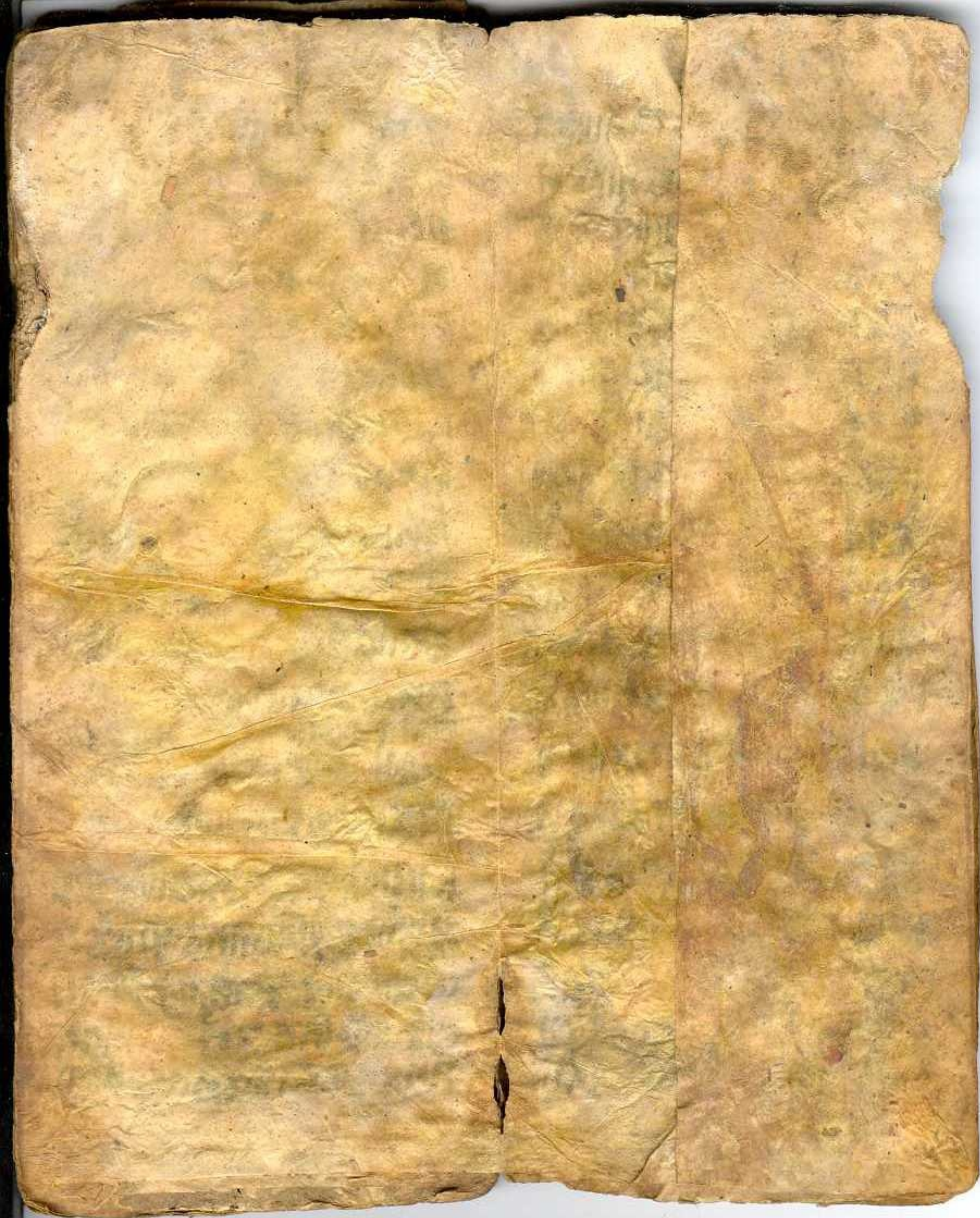
[illegible]

ऊनकाऊनसाईवनसायावयायछुकर्मकनडाकर्मकनीनहवनसि यात
यायकनी ॥ कलगादिमालकावाकलदिदकिल ॥ कलगासीवोद
॥ उंजाडि ॥ ॥ न्यासादिविसुनी ॥ उंउदयनमस ॥ सूर्यगमकिधाय ॥
यऊमानाएयदयोनगामुणलुनिधाय ॥ कलगादिखे ॥ उंउदयनमस ॥
वंग ॥ उंउयदयग ॥ सिन्धु ॥ उंउदयविषय ॥ सूर्य ॥ उंउदयिदुवा ॥ अंगु ॥
उंदीर्घयस ॥ आणीवोद ॥ उंउयसि ॥ उंउयवात्मश ॥ सिन्धुमदकिया ॥ उंउ
यग ॥ मालकाई ॥ उंउदय ॥ सूर्यनलेय ॥ उंउया ॥ उंउय ॥ उंउय ॥ उंउय ॥

नाथानीर्विद ॥ ॥ इ स्वायि
स्वायि ॥ ॥ कीमानी पवन
स्वायिवादि ॥ ॥ इतिथा समा
कारयविधि ॥ ॥ स्व सिखा
ययिथथथसिमाका यथ
स्वसिखाय ॥ ॥ वेगासिखाय
कपयस्वरिषक स्वगम मा
न ॥ ॥ सकलमडिधर सि
स्वायक ॥ ॥ इतिस्वसि स्वा
ययविधि ॥ ॥ आवनच यया
विधि ॥ ॥ विविथकल ॥ ॥ पुन
याय ॥ ॥ कीमानी ॥ ॥ आवन
पवनवाय ॥ ॥ यजमा ॥ ॥ तस्य
गुरुगुरुस्वलि ॥ ॥ पुनकल ॥ ॥
पुननिमित्तार्थ ॥ ॥ वाक ॥ ॥ य
थाकर्मसमावयास ॥ ॥ जस
सिक्कसा ॥ ॥ निर्मिदुनव लि ॥
मगरुगाउवास ॥ ॥ पुननद्राय ॥
यंवाग्नस्तान ॥ ॥ चन्दनादिन
पूजायाय ॥ ॥ आवनचियू
स्वयाहाथपूजायाय ॥ ॥ वा
स्वजादकाय ॥ ॥ आवनच

मिलहाय ॥ ॥ लडाहाकाका
दयका ॥ ॥ आवनचमक ॥
वाकयाहाव ॥ ॥ वलिवायक ॥
सहजानधिपुतिहा ॥ ॥ ददि
लादान ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
न ॥ ॥ कल ॥ ॥ रिषक ॥ ॥ चन्दनस
गुलाजीर्विद ॥ ॥ इस्वायिस्वा
य ॥ ॥ इतिआवनचययाविधि
॥ ॥







अथ विवाहादय विविचीकृतं
 कथं विवाहं स लक्ष्यं योऽपि
 प्रकृतं गच्छेत् स तं कृतं कृतं
 नान्द्रा यत्नं नान्द्रा स लक्ष्यं
 चक्रे इतिष्ठ लक्ष्यं यावत्
 थामरुचं गच्छेत् स लक्ष्यं
 गच्छेत् स लक्ष्यं गच्छेत् स लक्ष्यं
 थका विवाहं गच्छेत् स लक्ष्यं
 यत्नं नान्द्रा यत्नं नान्द्रा
 यावत् स लक्ष्यं गच्छेत् स लक्ष्यं
 चक्रे लक्ष्यं विवाहं कृतं
 स लक्ष्यं कृतं कृतं कृतं
 दानं आनीय दानं कृतं
 ॥००॥ विवाहादय स माय ॥१॥

